'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2019-20-21
WPP Licence No.- U(C)-101/2019-2021
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 15.04.2019
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रकाशक : डॉ. उदित राज, चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 011-23354841-42

Website : www.aiparisangh.com E-mail: parisangh1997@gmail.com

● वर्ष : 22 ● अंक 8 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● कुल पृष्ठ संख्या 8 ● 1 से 15 अप्रैल, 2019

बाबा साहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

डॉ. अम्बेडकर को लोग अपनी सुविधा अनुसार इस्तेमाल करते हैं, अपने जीवन काम में भले ही उनकी शख्सियत इतनी बड़ी न रही होगी लेकिन समयांतराल उनका व्यक्तित्व विशाल होता गया । जरुरी नही है हर किसी के काम का न्याय हो। कुछ लोग पैदा ही होते हैं महान, कुछ बनाये जाते हैं और असली तो वो होते हैं जो विचारों और कार्यो से लाभान्वित होकर के मानते हैं। डॉ. अम्बेडकर को लोगों ने ही महान बनाया है, जिनसे उनके जीवन में परिवर्तन हुआ। धीरे-धीरे व्यक्तित्व और विशाल होता जा रहा है और बहुत लोग ऐसे हैं जो लाभ उठाने का मौका तलाशते रहते हैं। लाभ उठाना गलत नही है लेकिन अपनी सुविधा के अनुसार उस पक्ष को उछाल और तोड़-मरोंड कर के उठाना जो मूल दर्शन का हिस्सा न हो या अर्थ का अनर्थ करके पेश किया जाये।

डॉ. अम्बेडकर ही ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका जन्मदिन कुछ दिनों ही नही बल्कि महीनों तक मनाया जाता है। हम देखते हैं कि दलितों में कुछ ऐसे लोग हैं जो उन्हें अपनी बपौती समझते हैं अगर दूसरा कोई विचारधारा को अंगीकार करे तो ईर्ष्या एवं हँसी का पात्र बनाते हैं और ऐसे लोग मूर्ति पूजक हैं न कि विचारधारा को मानने वाला। इनकी चर्चा, भाषा और गतिविधियाँ तो ऐसी लगती हैं जैसे वही विरासत के

मालिक हों लेकिन व्यावहारिकता में गुटबाजी, जातिवाद और उन्ही रीति-रिवाजों को मानते हैं जिनका निषेध डॉ. अम्बेडकर ने किया था। ऐसे लोग कुछ तो लाभ उठा ही ले जाते हैं। दूसरे वो लोग हैं जो दावा तो नही करते कि विरासत के वो मालिक हैं लेकिन अवसर और वक्त का तकाजा देखते ही कुछ न कुछ उपयोग-दुरुपयोग कर ही लेते हैं। ऐसे लोग मौके की तलाश में रहते हैं और स्वयं के साधन और शक्ति लगाकर जन्मदिन, सभा और मूर्ति-स्थापना आदि कराते हैं और सामाजिक-राजनैतिक फायदा उठा ले जाते हैं।

समाज का एक बड़ा हिस्सा जिसमे दलित भी हैं, डॉ. अम्बेडकर को समझते हैं कि वह दलित के लिए ही मूलरूप से लड़ते रहे। लन्दन की गोल मेज की सभा में जब अछूतों की बात डॉ. अम्बेडकर ने उठाया तो गांधी जी चौंक गए चूँकि उससे पहले वह जानते ही नही थे कि डॉ. अम्बेडकर कौन हैं। उन्होंने पूछा कि क्या यह व्यक्ति पुणे का ब्राह्मण है ? बाद में जाकर के वो जान सके डॉ. अम्बेडकर अछूत थे। इस समाज का जड़त्व टुटा नही है और महापुरुषों को जाति के कटघरे में किया जाता रहता है। उत्तर-प्रदेश के कुछ कुर्मी सरदार पटेल को अपना नेता मानते हैं इस आधार पर कि वो कुर्मी थे, एक बार कांशीराम जी से पूछा कि क्या सरदार पटेल कुर्मी थे तो उन्होंने कहा ऐसा नही है। पटेल और कुर्मी में भिन्नता भी बताई थी। उनसे मैंने इसलिए पूछा कि वह जाति के बारे में बहुत अधिक ज्ञानवान थे। यह कटु सत्य है कि मराठा छत्रपति शिवाजी को, दलित-आदिवासी डॉ. अम्बेडकर को और आदिवासी बिरसा मुंडा को, ब्राह्मण मदन मोहन मालवीय को अपनी-अपनी जाति से पहचान बनाने में पीछे नही रहते। भले ही लेखन में या चर्चा में यह कटु सत्य स्वीकार न हो लेकिन यह सच्चाई है। जब समाज में जाति है तो स्वाभाविक है इंसान के मन-मष्तिष्क बिना प्रभावित किये नही रह सकता।

भारतीय समाज परिवर्तन को आसानी से स्वीकार नही करता, अगर हम दूसरे समाज को देखें तो बड़े-बड़े खूनी और सामाजिक परिवर्तन से गुजरे हैं। रुस में बोल्सेविक क्रांति हुई और बंदूक की नोक पर जार साम्राज्य से सत्ता छीना, चीन की लाल सेना ने वहां के साम्राज्य चियांग काई सेक से सत्ता छीनी। जब अचानक व्यवस्था बदलती है तो अन्य सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य तेजी से बदल जाते हैं। क्या चीन की क्रांति से पहले कभी सोचा गया था कि अधार्मिक होना अनिवार्य होगा। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का हाल में फरमान जारी हुआ कि जो 9 करोंड सदस्य हैं वो धर्म से दूर रहे, अधार्मिक रहे और ज्यादातर स्वतः अधार्मिक हैं। इन उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि भारतीय समाज में कोई गुणात्मक परिवर्तन कभी नही हुआ। जब ऐसा नही हुआ है तो चाहे डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा हो या गाँधी या श्यामा प्रसाद मुखर्जी, इनके मानने वाले किस सीमा तक अपने जीवन में अवतरित करते हैं। बिना सामजिक परिवर्तन के अन्य क्षेत्र चाहें आर्थिक हो या राजनैतिक हैं, कोई गुणात्मक परिवर्तन की सम्भावना नही है। यह भी सही है कि लोग पूरी तरह से निषेध नही करेंगे और न ही स्वीकार करेंगे, अतः सुधारवादी या उदारवादी दौर से ही समाज गुजरना तय है और यह विडम्बना भारत के समाज की है जिसको देर-सबेर तोडना है। यदि यह नही टूटता है तो किसी भी क्षेत्र में बड़े परिवर्तन की उम्मीद भी नही करनी चाहिए।

उपरोक्त विश्लेषण से यह ताज्जुब नही होना चाहिए कि चाहें डॉ. अम्बेडकर हो या अन्य कोई महापुरुष, बहुत संभव है कि लोग वही करेंगे जो उनके लिए सुविधाजनक होगा न कि मूल दर्शन और विचार। राजनैतिक लोग तो और भी सुविधाजनक पक्ष से जुड़े हुए दिखेंगे, जो उनके लिए लाभदायक हो। वे लोगों से जरुर कहेंगे कि विचारधारा को माने लेकिन स्वयं वही करेंगे जो उनके लिए सुविधाजनक है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि परिवर्तन हो लेकिन दूसरो में। प्रतीकात्मकता किसी भी दिशा में दूर तक जाने वाली नही है लेकिन जब जनता की ही सोंच-समझ ऐसी हो तो सबकुछ चल सकता है। एक कहावत चरितार्थ है कि ''क्रन्तिकारी पैदा हो लेकिन अपने घर में नही पड़ोस के घर में''।

✦✦✦

परिसंघ की बेबसाइट पर ऑनलाइन सदस्य बने एवं सहयोग राशि भेजें

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की बेबसाइट पर अब ऑनलाइन सदस्यता का प्रावधान कर दिया गया है। www.aiparisangh.com बेबसाइट पर जाकर कोई भी सदस्यता शुल्क की ऑनलाइन पेमेंट करके वार्षिक एवं आजीवन सदस्य बन सकता है। इस पर डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग आदि सभी माध्यमों से पेमेंट की जा सकती है। अब कोशिश रहे कि ज्यादातर ऑनलाइन ही किया जाए, फिर भी यदि सदस्यता फार्म और डोनेशन की रसीदें छपी हुई चाहिए तो **राष्ट्रीय कार्यालय में सुमित मो . 9868978306** से सम्पर्क किया जा सकता है।

परिसंघ के पदाधिकारियों से निवेदन है कि प्रयास करके अधिक से अधिक लोगों को सदस्य बनाएं। यदि प्रदेश या जिले स्तर के पदाधिकारी अन्य लोगों को सदस्य बना रहे हैं तो वे फार्म में रेफर्ड बाई के कॉलम में अपना नाम अवश्य लिखें, इससे राष्ट्रीय कार्यालय को पता लग सकेगा कि किस पदाधिकारी द्वारा कितना ऑनलाइन डोनेशन कराया गया है और उनके माध्यम से कितने सदस्य बनाए गए हैं। इसके अलावा बेबसाइट पर परिसंघ का संक्षिप्त परिचय, राष्ट्रीय अध्यक्ष का परिचय के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारियों के फोटो के साथ पता एवं मोबाइल नंबर भी दिया गया है, (http://aiparisangh.com/officebearers/) ताकि जो लोग अलग-अलग प्रदेशों से बेबसाइट देखें उन्हें पता लग सके कि उस प्रदेश के किस पदाधिकारी से सम्पर्क किया जा सकता है। इसके अलावा 'वॉयस ऑफ बुद्धा' भी बेबसाइट पर जाकर पढ़ा जा सकता है।

'मुख्यमंत्री, मंत्री और जो राष्ट्रपति हुए सबने किया यौन-शोषण, राजनीति में अस्मिता-हीन औरत की वेश्याओं से भी अधिक दुर्दशा' : रमणिका

रमणिका गुप्ता

स्त्रीकाल के शीघ्र प्रकाश्य मीटू अंक में रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'आपहुदरी' से यह अंश प्रकाशित हो रहा है। कांग्रेस के कई मंत्रियों, नेताओं के यौन-व्यवहार पर टिप्पणी करती यह आत्मस्वीकृति स्त्रीवादी नजरिये से पढ़े जाने की मांग करती हैं। रमणिका गुप्ता 26 मार्च 2019 को स्मृतिशेष हो गयीं।

राजनीतिक झूठ से पहला परिचय

(सन् 1962-1964 के बीच)

किसी कवि सम्मेमलन के दौरान मेरी मुलाकात रांची के अनिरुद्ध मिश्रा से हुई, जो रांची यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे। उन्हीं की मार्फत मेरी मुलाकात बिहार के राज्य मंत्री श्री झा से हुई। उसका एक एजेंट था दिलीप झा, जो आनन्दमार्गी था। इन दोनों के हाथों मैंने काफी जिल्लत उठाई। सबसे पहले मेरा राजनीतिक शोषण बिहार के इसी मंत्री ने किया। उन्होंने मुझे झूठ-मूठ बताया कि मुझे केन्द्र सरकार की एक कमेटी का सदस्य बना दिया गया है, जिसके वे चेयरमैन हैं।

एक दिन अचानक वे मेरे घर आए और कहा, ''मैं आज दिल्ली जा रहा हूं। कमेटी की बैठक है, तुम्हें भी भाग लेना है।''

''पर चिट्ठी तो मुझे नहीं आई?'' मैंने पूछा।

''मैं अध्यक्ष हूं, मैं ही तो चिट्ठी देता हूं, मैं ही तुम्हें कह रहा हूं। अब और कौन-सी चिट्ठी चाहिए?''

मैं बिना सवाल किए उनके साथ दिल्ली जाने को तैयार हो गयी। हम तीनों प्रथम श्रेणी के कूपे में बैठे। काफी देर तक बातें हुईं। फिर अचानक झा जी ने प्रेम प्रदर्शन शुरू कर दिया। मैं समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूं? ट्रेन से कूदा तो नहीं जा सकता था। वे एक नहीं, दो थे। मैंने दिलीप की उपस्थिति पर आपत्ति की, तो उन्होंने कहा हम दोनों में कोई फर्क नहीं। बाद में मुझे रास्ते भर लेक्चर पिलाते गये।'

''राजनीति में आई हो, तो राजनीति के ढंग सीखो। यहां यह सब होना मामूली बात है।''

हम लोग अगले दिन सवेरे दिल्ली पहुंचे। बिहार भवन में ठहरे।

''मीटिंग कब होगी? कहां जाना होगा हमें?'' हर रोज सुबह उठकर मैं पूछती।

''क्या जल्दी है? होगी न मीटिंग?'' मुस्कराकर दिलीप झा कहते। मैं तीन दिन तक उस मीटिंग में जाने के लिए इन्तजार करती रही, जो कभी हुई नहीं।

''मीटिंग तो हुई नहीं और हम लौट रहे हैं?'' मैंने लौटते वक्त पूछा।

''अरे मीटिंग तो की न हम तीनों ने। क्या दरकार है किसी और की? हम तीनों एक साथ रहे, यही मीटिंग है, यही राजनीति है।'' लोकेश झा विनोदा बाबू (बिहार के मुख्यमंत्री विनोदानंद झा) के मंत्री मंडल में राज्य मंत्री थे।

मैं अवाक् और दुखी थी और थी मन ही मन गुस्सा भी, पर धनबाद वापस लौटने तक मैं यह गुस्सा व्यक्त नहीं कर सकती थी क्योंकि मुझे यह आभास मिल गया था वे खतरनाक भी सिद्ध हो सकते हैं। धनबाद में लौटते ही मैंने स्टेशन पर ही अपने मन की भड़ास निकाली और अलग से वाहन लेकर अपने घर पहुंची। मैं ये सारा किस्सा किसे बताउ? समझ नहीं आ रहा था। दिलीप ने मुझे तंग करना शुरू कर दिया। एक दिन वह बिना बताए हमारे घर भी आ टपका। मैंने उसे लताड़कर लौटा दिया, पर उसने धमकियां देनी बंद नहीं कीं। बाद में पता चला कि लोकेश झा एक पूर्व महिला विधायक (बिहार विधान सभा) की बेटी, जो उन्हें स्टेशन पर छोड़ने आई थी, को जबरन ट्रेन में बैठाकर दिल्ली तक भोगते गये थे। मैंने इनकी शिकायत रांची वाले प्रोफेसर अनिरुद्ध मिश्रा से टेलीफोन पर की, तो उन्होंने दोनों को कुछ हिदायतें दीं। दिलीप झा धनबाद में रहता था और आनन्दमार्गी होने के कारण बाद में गिरफ्तार भी हुआ था। ललितनारायण मिश्रा की हत्या में भी आनन्दमार्गियों के हाथ होने की खबर फैली थी।

चीन का युद्ध

(सन् 1962-1964 के बीच)

चीन के साथ युद्ध शुरू हो गया था। देश की रक्षा के लिए पूरा देश उठ खड़ा हुआ था। जनता का हर तबका अपने-अपने स्तर पर लाम पर जाने वाले सैनिकों की मदद के लिए धन जुटाकर सरकारी खजाने में जमा करने के लिए उद्यत था। नौकरशाह, जनता, सत्ता, विपक्ष सब संकट की इस घड़ी में एकजुट हो गये थे। सिविल डिफेंस के लिए अफसर और नागरिक सैनिक-प्रशिक्षण ले रहे थे, ताकि आपातकाल में वे भी शत्रु के खिलाफ मोर्चा सम्भाल सकें।

मेरी समाजसेवा चल रही थी। चीन की लड़ाई में मैंने, प्रकाश और एस.पी. की पत्नी तथा कई मित्रों ने 'सेल्फ डिफेंस' की ट्रेनिंग ली थी। मैं तो नागपुर जाकर सिविल डिफेंस का कोर्स भी कर आई थी। मैंने अच्छी तरह बन्दूक चलाने के साथ-साथ जीप चलाना भी सीख लिया था। उस कोर्स में मुझे डिस्टिंक्शन मिली थी। नागपुर से लौटकर मैं, प्रकाश और एस.पी. की पत्नी तथा अन्य सिविल अधिकारियों की पत्नियों के साथ प्रशिक्षण कैम्प में नियमित रूप से जाने लगी थी। उन दिनों देश-प्रेम की एक लहर उमड़ पड़ी थी। जैसे ही पता चलता कि कोई ट्रेन सैनिकों को लेकर युद्ध के मोर्चे पर जा रही है, स्टेशन पर जनता का सैलाब उमड़ पड़ता। कोई फल, कोई मिठाई तो कोई हाथ से बुना मफलर या स्वेटर लेकर उन्हें उपहार देने के लिए पहुंच जाता। लड़कियां राखी बांधने के लिए कतार में लग जातीं तो स्त्रियां तिलक लगाने की होड़ लगातीं। जनता और सैनिकों का उत्साह बढ़ाने के लिए शहर-शहर कवि-गोष्ठियां होने लगीं। इस मुहिम में मैं और प्रकाश भी शामिल हो गये। मेरी कविता ने भी तेवर बदल लिए और मैं हर रोज युद्ध को केन्द्र में रखकर कोई-न-कोई कविता लिखने लगी।

चीन के युद्ध में जाने वाले सिपाहियों के लिए मेरी कविता, 'रंग बिरंगी तोड़ चूड़ियां हाथों में तलवार गहूंगीध मैं भी तुम्हारे संग चलूंगी, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी', काफी मशहूर हुई। जब मैंने कप्तान रंजीत सिंह के साथ रानी झांसी के रूप में डेब्यू (झांकी) किया और धनबाद से झरिया तक यह कविता पढ़ते हुए गयी, तो 60 हजार के करीब चंदा मेरी झोली में आया, जो मैंने सरकारी खजाने में जमा करवा दिया। मैंने कॉलेज की लड़कियों को प्रशिक्षण देकर चंदे के लिए नृत्य शो करवाए, जिससे काफी पैसा जमा हुआ। चीन पर कवि सम्मेलन किया, जिसमें देश-प्रेम एवं शौर्य की कविताएं पढ़ी गयीं।

राजनीति में पहली कामयाब दस्तक

(सन् 1962-1964 के बीच)

इसी मुहिम के दौरान मैं राजनैतिक स्तर पर कांग्रेस से जुड़ गयी। मेरी ख्याति चारों ओर फैल गयी थी। आयोजनों के लिए लोग मुझसे मदद लेने आने लगे। कांग्रेस के कार्यकर्ता मेरे घर पर जुटने लगे। इसी दौरान समाज-सेवी महिलाएं भी मेरे सम्पर्क में आईं। वे सब मुझे अपनी संस्थाओं से जुड़ने के लिए आग्रह करने लगीं। कवि जन तो विशेषकर हमारे यहां जमघट लगाने लगे और एक बड़ा कवि-सम्मेलन करने की योजना बनाने लगे। मुख्यमंत्री के.बी. सहाय के जन्मदिन पर आयोजन करने के लिए भी सुझाव आए। बस फिर क्या था! मैंने मुख्यमंत्री के.बी. सहाय के जन्म दिवस पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के आयोजन की घोषणा कर दी। बी.पी. सिन्हा को यह बात बहुत खली। मैंने अपने बल पर भारत भर के कवियों को बुलाया। हमने चंदा करके कवि-सम्मेलन का खर्च स्वयं ही जुटाया। इसमें काका हाथरसी, जानकी वल्लभ शास्त्री , हंस कुमार तिवारी, गोपाल सिंह नेपाली तथा बहुत से युवा कवि आए, जो मंच पर बहुत ही जमे। बी.पी. सिन्हा नाराज थे कि मैंने कैसे उनकी बिना इजाजत के.बी. सहाय को बुलाने की हिम्मत की। के.बी. सहाय तो केवल उन्हीं के बुलाने पर आते थे। खैर मंच से उतरते समय के.बी. सहाय ने मुझे बुलाकर कहा, ''पटना आओ, जो मदद चाहिए, मिलेगी। तुम्हें कुछ काम भी सौंपा जाएगा।''

सब हतप्रभ थे। कांग्रेसी स्तब्ध थे। एक नयी महिला, जो बिहार की रहने वाली भी नहीं, जो नेताओं के किसी गुट में भी शामिल नहीं, जिसका नामी श्रमिक नेता बी.पी. सिन्हा विरोध करते हैं, उसे मुख्यमंत्री ने स्वयं पटना आने के लिए कहा आश्चर्य! मैं अपनी इस नयी पहचान पर मुग्ध थी। राजनीति में यह मेरी पहली कामयाब दस्तक थी।

''ये कल की आई औरत को मुख्यमंत्री ने कैसे घास डाला? हम तो बरसों से लाइन में हैं? बिना साहब (बी.पी. सिन्हा) के पूछे तो कोई भी मंत्री किसी नेता से बात नहीं करते थे? ये सीधे बतिया लीं, वह भी मुख्यमंत्री से!'' वे बौखला कर कहते।

खैर, कवि सम्मेलन चर्चा का विषय बन गया। उन दिनों श्री धनोआ धनबाद से डिप्टी कमिश्नर थे।

''इस राजनीति में मत पड़ो, खतरा है।'' श्री धनोआ ने मुझे बुलाकर समझाया।

मैं कुछ समझी, कुछ नहीं समझी और कुछ जानबूझ कर नहीं समझने का नाटक करती रही। मैं जान रही थी मेरा के.बी. सहाय से सीधे बात करना गॉडफादर को बुरा लगा है। खैर चीन युद्ध के लिए चंदा करने और मुख्यमंत्री के जन्मदिन का मामला था, लोग ज्यादा दखल नहीं दे पाए।

प्रशंसकों से अधिक मेरे शत्रु बन गये थे, जो प्रशंसकों की बनिस्बत ज्यादा ताकतवर थे। हां तो कवि सम्मेलन में मुख्यमंत्री के.बी. सहाय द्वारा मुझे आमंत्रित करने पर धनबाद के गॉडफादर कहलाने वाले नेता व उनके पिट्ठुओं में हड़कंप मच गया। लगा इंद्र का सिंहासन डोल गया है। मुझ पर कई तरफ से दबाव डलवाने की कोशिश की गयी कि मैं इस पचड़े में न पड़ूं। मुझे तो विरोध होने पर, विरोध का मुकाबला करने की आदत है, जो हमेशा जिद की हद तक पहुंच जाया करती है। सो उनके विरोध ने मुझमें एक जिद पैदा कर दी और जोखिम को समझते हुए भी मैं पटना जा पहुंची। तब तक मेरी समझ में ये आ चुका था कि राजनीति में आने वाली औरत को जोखिमों के खिलाफ एक सुरक्षा-कवच की जरूरत होती है।

सुरक्षा कवच

(सन् 1962-1964 के बीच)

मैं मुख्यमंत्री से मिलने पटना पहुंची। वे सवेरे चार बजे उठकर फाइल देखते थे। उसी समय वे अपने खास मिलने वालों को बुलाते थे, जिनमें औरतें भी होती थीं। छह बजे के लगभग वे सैर करने के लिए निकलते थे। रास्ते में पैरवीकार उनसे बातें करते चलते थे। के.बी. सहाय मुख्यमंत्री के पुराने निवास में ही रहते थे, जहां बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह रहा करते थे। वे गम्भीर राजनीतिक वार्ताएं और फैसले भी उसी सैन के दौरान किया करते थे।

मैं सवेरे चार बजे मिलने वालों की सूची में थी। मैं गयी। फाइलों से सिर उठाकर उन्होंने सराहना भरी नजर से मुझे देखा।

''तुम्हारा प्रोग्राम तो बहुत अच्छा था।'' कहते हुए वे उठे। मैं खड़ी थी। उनका पी.ए. जा चुका था।

''बोलो क्या चाहिए, बिहार का मुख्यमंत्री तुमसे कह रहा है।'' मेरी तरफ आते हुए वे हाथ फैला कर बोले। मैं स्तब्ध थी।

''महिलाओं के प्रशिक्षण केन्द्र के लिए भवन बनाने के लिए धनबाद में कांग्रेस अ०फिस के बगल वाली जमीन चाहिए।'' एकाएक मेरे मुंह से निकला।

''अर्जी लाई हो?'' उन्होंने पूछा।

''जी।'' मैंने कहा।

उन्होंने अर्जी लेकर जमीन आवंटन की प्रक्रिया पूरी करने का आदेश जिला-परिषद के मंत्री श्री वागे को लिख दिया, जो एक आदिवासी मंत्री थे। जिला परिषद धनबाद का अध्यक्ष उन दिनों एक कोलियरी का मालिक था, जो वास्तव में एक लठैत बनकर धनबाद आया था। वह मालिक-सह-लेबर लीडर बन गया था। वह राजपूत था। चूंकि मुख्यमंत्री बी. पी. सिन्हा को, (जो भूमिहार थे) तरजीह देते थे, इसलिए पूरा राजपूत वर्ग उनका भी विरोधी था। बिहार में भूमिहार और राजपूत दोनों ही जमींदार वर्ग के हैं, हालांकि कायस्थों का समझौता बिहार में प्रायः राजपूतों के साथ होता था।

भले बाद में लाल सेना के खिलाफ रणवीर सेना के झंडे तले दोनों जातियां एक होकर खड़ी होने को मजबूर हो गई थीं, पर आपसी रिश्तों में उनका जातीय बैर आज भी बरकरार है। उक्त नेता जी उसमें अपवाद थे।

''जाओ ये पत्र लेकर राजा बाबू से मिलो, वे तुम्हें बी.पी.सी.सी का सदस्य मनोनीत कर देंगे। तुम कांग्रेस पार्टी का काम करो। मेरा मन तो तुमने जीत ही लिया है।'' यह कहते हुए उन्होंने मुझे आगोश में लेकर चूम लिया। शायद मैं सपना देख रही थी।

मैं विरोध नहीं कर सकी या शायद मैंने विरोध करना नहीं चाहा। ऐसे भी क्षण आते हैं जीवन में जब अचानक, अनपेक्षित लादे गए अहसानों का अहसास किसी की ऐसी हरकत को नजरअंदाज करने में सहायक बन जाता है। राजनीति में ऐसे ही अहसानों में कमी आने पर आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चल जाता है। तनावग्रस्त राजनेता महिला कार्यकर्ताओं से शारीरिक सुख पाकर तनाव-मुक्त होने को अहसान के रूप में लेता है, तो राजनीतिक महिलाएं उसके बदले सुरक्षा और वर्चस्व के फैसले अपने पक्ष में हासिल करती हैं। जो महिलाएं राजनीतिक नहीं होतीं, वे पैसे या भौतिक उपहारों से सन्तुष्ट हो जाती हैं या पुरुषों की तरह ही ट्रांसफर-पोस्टिंग से कमाई करती हैं। उनके पति भी इसमें दलाली करते हैं।

अब कहूं कि यह मेरा शोषण था, तो शायद यह गलतबयानी होगी क्योंकि राजनैतिक सीढ़ियों पर चढ़ने वाले प्रायः हर व्यक्ति को, औरत हो या मर्द, सुरक्षा-कवच जरूरी होते हैं। मुझे मुख्यमंत्री का सुरक्षा कवच मिल रहा था। छद्म नैतिकता की बजाय, शायद ज्यादा भरोसेमंद था यह आश्वासन! यह मुझे राज्यमंत्री लोकेश झा या

शेष पृष्ठ 3 पर

'मुख्यमंत्री, मंत्री और जो राष्ट्रपति हुए सबने .....

पृष्ठ 2 का शेष

दिलीप जैसे दरिन्दों के हाथ में पड़ जाने से बेहतर लग रहा था। इसमें स्नेह भी झलकता था। हो सकता है इसमें दोनों को एक-दूसरे का फायदा नजर आता हो, पर यह व्यापार तो नहीं ही था। ऐसे रिश्तों में कुछ न कुछ लगाव भी रहता है। लगाव के साथ-साथ कहीं-कहीं लक्ष्य भी एक होता है। इसे व्यावहारिकता भी कहा जा सकता है। शायद इसे समझौता भी कह सकते हैं, पर समझौता किससे? सम्भवतः इसमें दोनों का स्वार्थ भी हो सकता है? पर एक मुख्यमंत्री का क्या स्वार्थ होगा एक अदना कार्यकर्ता से? जब कोई औरत या पुरुष किसी ऐसे व्यक्तित्व की प्रेमाभिव्यक्ति से अपने को गौरवान्वित समझे, तो उसे मंत्रमुग्धता की पराकाष्ठा भी कह सकते हैं। सभ्यता के इतिहास का बड़ा हिस्सा या कहें 99 प्रतिशत भाग, ऐसे ही समझौतों, विरोधों और गौरवानुभूतियों या अपराध-बोधों का दस्तावेज है। सवाल है कोई किस पहलू से उस स्थिति को देखता है। मातृसत्ता की समाप्ति के बाद से औरतों की पूरी जिन्दगी इन समझौतों के स्वीकार या नकार की ही रही है। इन समझौतों, नकारों, स्वीकारों और समर्थनों को ढंके-छिपे रखने में जो स्त्रियां कामयाब रहीं, वे असाधारण कहलाईं, जो ऐसा नहीं कर सकीं, वे कुल्टा या छिनाल। ऐसा सम्बन्ध, जहां कोई स्त्री को सरल-सुलभ प्राप्य वस्तु मात्रा समझ कर फॉर ग्रान्टेड मानने लगे, स्त्री के स्वाभिमान को ठेस पहुंचता है, इसीलिए स्त्रियां उसे नकारती हैं। सहमति से बने सम्बन्ध को प्रेम भी कह सकते हैं, भले समाज उन्हें व्यभिचार की श्रेणी में ही क्यों न रखता हो। ऐसे सम्बन्ध प्रायः देवर-भाभी में प्रचलित रहे हैं। इस सन्दर्भ में पंजाब का लोकगीत ही सारी कथा बयां कर देता है।

''जुत्ती नारोवाल दी, नी सितारयां जड़त जड़ी

हाय वे रब्बा जेठानी क्यूं बैर पई।''

(सितारों से जड़ी है नारोवाल की जूती। हे ईश्वर जेठानी क्यों मेरी बैरी बनी है?)

असहमति से बनाया गया सम्बन्ध बलात्कार बन जाता है।

राजनीति में समझौता या व्यभिचार ज्यादा चलता है और बलात्कार कम। कभी-कभी समझौते की परिस्थितियां बदलने पर भी अपवाद स्वरूप बलात्कार का रूप ले लेती हैं। मैंने स्वयं कई महिलाओं को आमंत्रण देते देखा है। उनके पतियों को बाहर पहरे पर बैठे भी देखा है। ऐसी स्थिति में यह व्यापार बन जाता है, जिसमें लाभ और हानि दोनों होते हैं। पति पत्नी के विकास की सीढ़ी बनने का रोल अदा करता है। वह अपना स्वार्थ पत्नी के माध्यम से सिद्ध करता है।

जबकि ठीक इसके विपरीत एक स्त्री , जब पुरुष के विकास की सीढ़ी बनती है, तो वह अपने अस्तित्व का बड़ा अंश बलिदान करती है। राजनीति में औरतों के साथ दिक्कत तब होती है, जब उनकी राजनीतिक जरूरत खत्म हो जाती है और उनकी उपेक्षा शुरू हो जाती है अथवा कोई दूसरी स्त्री उनकी जगह ले लेती है। इस उपेक्षा का सेक्स से ज्यादा सम्बन्ध नहीं होता। राजनीतिक पुरुष राजनीति में नयी आई महिलाओं को सेक्स का शिकार बनाते हैं लेकिन अधिकांश पुरानी महिलाएं जो सब अवरोधों के बावजूद अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं, मोर्चे पर डटी रहती हैं, की अस्मिता को भी कालांतर में स्वीकृति मिल जाती है। अस्मिता के नकारे जाने पर ही राजनीतिक महिलाएं क्षुब्ध होती हैं और झगड़े बढ़ते हैं। ऐसे समय में पुरुषों के विभिनन गुट उस महिला को अपना मोहरा बनाकर अपनी शत्रुता साधते हैं। वे विरोधियों का भयादोहन करते हैं या अपनी गोटी फिट करते हैं। शुरू के दिनों में ही यदि कोई औरत अपनी अस्मिता को कायम रखे, तो दिक्कतें कम आती हैं। राजनीति में अस्मिता-हीन औरत की वेश्याओं से भी अधिक दुर्दशा होती है। शुरू में हर औरत एक रुतबा पाती है लेकिन फिर उस पर सौदेबाजी शुरू हो जाती है। हां, अगर वह किसी नेता की पत्नी, बहन, मां या रखैल हो, तो बाकी मित्रा या नेता उसके साथ दूसरा व्यवहार करते हैं अन्यथा उसे किसी पुरुष के समान ही आड़े हाथों लिया जाता है। औरत होने के नाते उसके चरित्र-हनन की मुहिम, बे सिर-पैर के आरोप और भयादोहन की प्रक्रिया से शुरू हो जाती है। उसकी कमजोरियों का लाभ भी वे उठाते हैं।

खैर! मैं भटक गयी। मुख्यमंत्री का पत्र लेकर मैं राजा बाबू के पास गयी। वे मेरी प्रशंसा पहले ही सुन चुके थे।

''बहुत अच्छा बोलती हो, मुख्यमंत्री बता रहे थे। आज ही तुम्हें बी.पी.सी.सी. का सदस्य मनोनीत करने का पत्र दे दूंगा। तुम मिलती रहा करो।'' उन्होंने हाथ पकड़कर स्नेहपूर्वक मुझे अपने पास बैठाते हुए कहा।

फिर अचानक उनके कमरे का दरवाजा बंद हो गया। मैंने एक असफल कोशिश की अपने को बचाने की, पर शायद यह कोशिश तीव्र नहीं रही होगी। शायद मुझे एक सुखदायक आश्वासन के साथ उनकी आंखों में स्नेह-भरा एक सक्षम सहारा भी झांकता दिखा होगा! यह एक दूसरा सुरक्षा कवच था। एक बिहार का शीर्ष नेता मुख्यमंत्री और दूसरा बिहार कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष। एक कायस्थ और एक ब्राह्मण। मुझे ये दोनों, दिलीप झा और उस भूमिहार डी.एस.पी. शर्मा के खिलाफ एक बहुत बड़ी ढाल की तरह शक्तिशाली और समर्थ संरक्षक के रूप में नजर आने लगे।

मैंने अपनी राजनीतिक-यात्रा शुरू कर दी। तमिल भाषा की कुछ जानकारी होने कारण मुख्यमंत्री का सन्देश, दिल्ली वाले अध्यक्ष यानी कामराज नाडार तक पहुंचाना भी मेरे काम में शामिल था।

पटना से लौटने पर मुझे राजनैतिक सुरक्षा कवच की जरूरत शिद्दत से महसूस हुई। एक रात एक भूमिहार डीएसपी (सीआईडी) शर्मा मेरे घर में जबरन घुस आया। यह डीएसपी बी.पी. सिन्हा का चहेता अधिकारी था, जो लोगों को डरा-धमका कर उन्हें बी. पी. सिन्हा के गुट में रखता था और उनके विरोधियों को सबक सिखाता था। मुझे काबू में लाने के लिए उसने एक पत्राकार सतीश चन्द्र से कहकर प्रकाश के खिलाफ अखबारों में छपवा दिया था कि प्रकाश की उर्दू शायरी का रिश्ता पाकिस्तान से है और यह भी कि वह अपनी पत्नी को इंश्योरेंस की एजेंसी दिलवा कर मालिकों पर प्रभाव डालकर पत्नी को पालिसी दिलवाता है और पैसा बनाता है। यह सही था कि मैंने इंश्योरेंस की एजेन्सी ली थी, पर प्रकाश के कहने पर नहीं, खुद स्वावलम्बी होने के लिए। तब तक एक भी पालिसी साइन नहीं हो पाई थी। फिर मैंने एजेंसी ही छोड़ दी। प्रकाश के क्लाइंटों से तो मैं कभी बात भी नहीं करती थी। दरअसल यह सब मुझे धमकाने और हासिल करने के लिए किया जा रहा था। धनबाद की संस्कृति में यह आम बात थी। मैंने इसकी शिकायत धनबाद से मनोनीत एक बंगाली राज्यसभा सदस्य और धनबाद कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रंगलाल चौधरी से कर दी। मुझे यह डर बना रहने लगा कि कहीं वह भूमिहार डी.एस.पी. आधी रात हमारे घर जगजीवन नगर में न आ धमके। इसीलिए मैंने अपने नौकर नेपाल से कह रखा था कि, ''अगर कुछ गड़बड़ हो, तो मेरे आवाज देते ही तुम अन्दर आ जाना।'' पहली बार तो वह कामयाब नहीं हुआ, पर एक दूसरे मौके पर उसने मुझे वश में कर ही लिया। खैर, मैंने उसकी शिकायत सबसे की और यह भी तय किया कि प्रकाश धनबाद से अपना तबादला कहीं अन्यत्रा दूसरे राज्य में करवा ले। उन दिनों प्रकाश श्रम विभाग छोड़ कर वेलफेयर डिपार्टमेंट में को-ऑपरेटिव सोसायटी (जो कोलफील्ड के पूरे कोयला क्षेत्र के लिए बनी थी) का मुख्य अधिकारी बन गया था।

कांग्रेस का जयपुर सम्मेलन

(सन् 1962-1964)

जयपुर में कांग्रेस का सम्मेलन था। मैं बी.पी.सी.पी. की तरफ से गयी थी। तिथियां याद नहीं हैं। उन दिनों इन्दिरा गांधी केन्द्र में मंत्री थीं। यशपाल कपूर उनके सेक्रेटरी थे। उनसे मेरी मुलाकात हो चुकी थी। वे भी मुझे तरजीह देते थे। उस सम्मेलन के दौरान उन्होंने मुझसे कहा था, ''रमणिका, युवाओं का जमाना आने वाला है। देखो, आगे-आगे क्या होता है! इन्दिरा जी के हाथ में बागडोर होगी। सभी युवाओं का यही सपना है। यही सपना दिखाओ कार्यकर्ताओं को।'' राजनीति की गम्भीर-गहन योजना में शीर्ष स्तर पर राजदां बनने पर मैं बहुत खुश थी। यशपाल कपूर मेरे मित्र बन गये। वे युवा थे, हैंडसम और स्मार्ट भी और राजनीति में मुझे आगे बढ़ाने में मददगार भी। कांग्रेस में दिल्ली की राजनीति में वे मेरे संरक्षक थे। उन दिनों राजनीति में आई स्त्रियों से राजनेताओं की मित्रता का अर्थ था दैहिक मित्रता, जो एक साथ कइयों से हो सकती थी। फिल्म उद्योग में भी यही अनिवार्य माना जाता था। दोनों में लक्ष्य सत्ता ही होता है, एक राजनैतिक-सत्ता, दूसरी आर्थिक सत्ता और तीसरी यश-सत्ता। दोनों में 'जन' महत्वपूर्ण है यानी जननेता-जननेत्री, जनप्रिय अभिनेता या जनप्रिय अभिनेत्री। दोनों ही लोकप्रियता का शार्ट कट रास्ता हैं। दोनों में ग्लैमर है, वैभव है। दोनों में स्त्री के लिए यौन आकर्षण और अभिव्यक्ति की शक्ति जरूरी है। एक का हथियार राजनीति है, तो दूसरे का हथियार कला। खैर३

जयपुर सम्मेलन में मंत्री गण दो घोड़ों की गाड़ी में मंच से रेस्ट-हाउस आया-जाया करते थे। मैं तमिल बोल सकती थी, इसलिए दक्षिण के प्रतिनिधि और मंत्री मुझसे अधिक घुल-मिल जाते थे। श्री संजीव रेड्डी उन दिनों कैबिनेट स्तर के केन्द्रीय मंत्री थे। मैं बोलने के लिए मंच पर अपनी चिट देने गई, तो उन्होंने मुझे मंच पर बिठाए रखा। एक नयी कार्यकर्ता के लिए तो यह बड़ी बात थी। बिहार की बड़ी-बड़ी हस्तियां नीचे प्रतिनिधियों के साथ पंडाल में बैठी थीं और मैं मंच पर लेकिन इसके पीछे की मंशा मुझे मालूम नहीं थी। संजीव रेड्डी से मैं यदाकदा तमिल में बात करती रही। हालांकि वे तेलुगु-भाषी थे, पर तमिल समझते थे। उन दिनों हर दक्षिण वाले को 'मद्रासी' कहने का प्रचलन था। उन्होंने मुझे उस सत्र के खत्म होने पर मंच के पीछे घोड़ों वाले रथ के पास आने को कहा। अपने सेक्रेटरी से कहकर उन्होंने मुझे मंच का पास दिलवा दिया। लंच ब्रेक होने पर सब उठे। मैं भी पीछे गयी, जहां उन्होंने मुझे रथ पर बैठा लिया। घोड़ा-गाड़ी में मैं बड़ी शान से मंत्री के साथ जा रही थी। वे रास्ते भर मेरी प्रशंसा करते रहे। बचपन में मुझे घर में बुरा कहा जाता था। इसके सिवा और कुछ सुनने को नहीं मिलता था। प्रशंसा के पुल बंधते देख मैं उन पुलों पर दौड़ने लगी। रेस्ट हाउस पहुंचने पर वे मुझे अपने साथ कमरे में ले गये और बैठने के लिए कह कर बाथरूम चले गये। मैं सोच रही थी कि शायद बाहर आकर वे तुरन्त खाना-वाना मंगवाएंगे। बड़ी जोर से भूख लगी थी। प्रतिनिधियों का निवास-स्थान वहां से बहुत दूर था। हम रोज वहां बस से जाते-आते थे। पंडाल में मैंने खाना नहीं खाया था। मैं रेड्डी जी के आने के इन्तजार में ही थी कि वे पूरी तरह नंगे होकर कमरे में आ गये। मंत्रियों के कमरे के दरवाजे उढ़के भी हों, तो कोई खोलने की हिम्मत नहीं करता, खुले भी हों तो कोई झांकने की जुर्रत नहीं करता और न ही जरूरत समझता है। सभी लोग मंत्रियों की आदतों से परिचित होते हैं।

मैं न बाहर जा सकती थी, न बैठी रह सकती थी। मैं हडबड़ा कर उठ खड़ी हुई, हतप्रभ-सी।

''तुम्हारा मुख्यमंत्री तो उस नर्स को भेजता है, मेरे पास, अपनी राजनीति ठीक करने के लिए। तुम भी क्या उन्हीं की तरफ से कुछ कहना चाहती हो?'' मंत्री जी बोले।

''ऐसा कोई काम मुझे आपके लिए सौंपा नहीं गया है। मैं तो बस आपके कामराज नाडार जी जब बिहार आते हैं, तो उनके भाषण को हिन्दी में अनुवाद कर देती हूं या दिल्ली आती हूं, तो उनसे मिलकर मुख्यमंत्री जी का कोई संदेश हुआ तो तमिल में समझा देती हूं। अध्यक्ष जी तो मेरे साथ एकदम बुजुर्ग जैसा व्यवहार करते हैं।'' मैंने कहा। नर्स से उनका अभिप्राय मधु से था। बाद में के.बी. सहाय ने मधु को एमएलसी भी बना दिया था। सुना है आजकल मधु की पौत्री एक बड़ी फिल्म एक्ट्रेस बन गई है।

इस पर वे बिना कुछ बोले वहीं कालीन पर लेट गये। जो बीता, वह तो बीता ही, पर बड़ी वितृष्णा हुई मुझे। तुरन्त उठकर उन्होंने कपड़े पहने और अपने पी.ए. को बुलाकर गाड़ी में मुझे पंडाल छोड़ देने को कहा। उस विशाल मंडल जैसे भवन में और कोई नहीं था। मेरा विरोध किसी काम का नहीं हो सकता था। मैंने एक ही निश्चय किया कि 'दोबारा ऐसा मौका उन्हें नहीं हथियाने दूंगी। बाद में वे राष्ट्रपति भी बने।

मुझे लगता है देश के सर्वोपरि पद राष्ट्रपति के चुनाव में इन्दिरा जी ने उनका विरोध सम्भवतः उनके ऐसे ही व्यवहार के कारण किया होगा। वे काफी उद्दंड थे। बाद में मैंने यह भी देखा कि कुछ अपवाद छोड़कर दक्षिण के नेतागण प्रायः सेक्स के अधिक भूखे होते हैं। उनमें नफासत या संवेदना कुछ नहीं होती। हालांकि राष्ट्रीय अध्यक्ष कामराज नाडार अपवाद थे। तथाकथित निम्न तबके से उच्च स्तर पर पहुंचे व्यक्ति को अपना अतीत अधिक याद रहता है।

शाम को मैं टैक्सी लेकर यशपाल कपूर से मिली और उन्हें पूरी घटना बताई। वे काफी नाराज दिखे। उन्होंने कुछ करने का आश्वासन भी दिया। औरतों के साथ ऐसा घटिया व्यवहार मुझे बहुत अखर रहा था, मैंने ऐसे लोगों का विरोध करने की मन में गांठ बांध ली। इस सम्मेलन में नेहरू जी और शास्त्री जी दोनों आए थे। नन्दा जी, जगजीवन बाबू और उनकी पुत्री मीरा कुमार भी थीं। मैं उन विशिष्ट हस्तियों की मुरीद (फैन) थी। आजादी की लड़ाई के ये प्रतीक थे और हम उनके अनन्य भक्त। तब इन्दिरा गांधी न तो उतने उफान पर थीं और न ही वे कोई हस्ती बन पाई थीं। वे नेहरू की पुत्री के रूप में ज्यादा जानी जाती थीं, ठीक उसी तरह जैसे नेतृत्व की क्षमता और सामर्थ्य रखने के बावजूद लोग-बाग विजयलक्ष्मी पंडित को नेहरू की बहन के रूप में ज्यादा याद करते हैं, न कि एक विदुषी व कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में।

http://streekaal.com/2019/03/sexual-harassment-in-politics/

दिल्ली के पार्लियामेंट स्ट्रीट के साथ-साथ पूरे देश में परिसंघ द्वारा 14 अप्रैल को मनायी गयी डॉ. अम्बेडकर जयंती

के.के.एस. राघव

नई दिल्ली। डी.ओ.एम. परिसंघ, अनुसुचित जाति एवं जनजाति संगठनों के परिसंघ, भारतीय समता समाज ने संविधन निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती बड़ी धूमधम से संसद मार्ग पर मनाई। इस मौके पर परिसंघ के चेयरमैन डॉ. उदित राज ने संबोधित करते हुए कहा की आज समाज में जितनी जागरूकता आई है वह अच्छी है लेकिन कुछ लोगों की वजह से यह समाज पीछे की ओर जा रहा है। जो तरक्की और उत्थान होना था वह नहीं हो पा रहा है क्योंकि जिस नेता से समाज के लिए अपेक्षा की जाती हैं उसको सहयोग नहीं दिया जाता है और जो नेता ज्यादा काम करता है उससे ही सवाल किया जाता है जबकि होना यह चाहिए कि जो समाज के लिये अपने तन-मन-ध्न और ईमानदारी से काम कर रहे हैं उनका समाज के लोगों को सहयोग करना चाहिये और अगर कोई कमी रह जाती है तो उसमें सुझाव भी उन्हें देना चाहिये। लेकिन सहयोग और सुझाव के वजाय कुछ लोग टीका टिप्पणी करते हैं और सहयोग नहीं देते हैं। जब यह लोग सवाल पूछने का अधिकार रखते हैं तो उन्हें सहयोग देने का भी अधिकार होना चाहिए।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर एवं तथागत गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए डॉ. उदित राज व परिसंघ के अन्य नेतागण

डॉ. उदित राज ने कहा की जबसे वह सांसद बने हैं उन्होंने कोई कोर कसर इस समाज के काम के लिये नहीं छोड़ी है और उन्होंने सबसे ज्यादा संसद में इनके लिये मुद्दे उठाये हैं। किसी भी पार्टी के नेता यहाँ तक की एस.सी/एस.टी.,ओ.बी.सी. के किसी नेता की हिम्मत नहीं पड़ी है जिसने सुप्रीम कोर्ट के खिलापफ संसद में आवाज उठाई हो। उन्होंने कहा की सुप्रीम कोर्ट ने विश्वविद्यालयों में आरक्षण 13 रोस्टर प्रणाली लाकर खत्म ही कर दिया था जिसके लिए मैंने संसद में लड़ाई लड़ी और सरकार को मजबूर होकर रोस्टर प्रणाली के लिए अध्यादेश लाना पड़ा। उन्होंने कहा की समाज को भी अपने मैं देखना होगा क्योंकि जब चुनाव आते हैं तो जाति ध्र्म और पार्टियाँ देखते हैं उस समय वह भूल जाते हैं की उनकी लड़ाई कौन सा नेता लड़ रहा है और किसको सहयोग देना है। आज देश में लाखों दलित संगठन बने हुये हैं जो अलग-अलग रहकर काम कर रहे हैं अगर सभी संगठन एक जुट होकर काम करें तो दलितों पर न कोई अत्याचार होगा और न ही कोई आरक्षण खत्म करने के बारे में सोच सकता है। दलित समाज के बिखरे होने के कारण ही आज संविधन में संशोध्न की बात उठ रही है।

सांसद मार्ग पर उपस्थित अपार जन समूह को संबोधित करते हुए डॉ. उदित राज

इस मौके पर भारतीय समता समाज के अध्यक्ष एवं डी.ओ.एम. परिसंघ के राष्ट्रीय सह-संयोजक कलीराम तोमर ने कहा कि डॉ. उदित राज सही मायने में ईमानदारी से दलित, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों की लड़ाई लड़ रहे हैं इसलिये उनका सभी को सहयोग देना चाहिये। देश में उदित राज ही ऐसे दलित नेता हैं जिन्हें 543 सांसदों में सर्वश्रेष्ठ सांसद के रूप में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। इसी से उनकी कार्यकुशलता, ईमानदारी, कर्मठता साबित होती है। वह अपनी लड़ाई ईमानदारी से लड़ रहे हैं। अगर इसी तरह कुछ और दलित नेता काम करें तो दुनिया की कोई ताकत नहीं है कि दलितों पर अत्याचार कर सके। श्री तोमर ने कहा की डॉ. अम्बेडकर दुनिया के मात्र एक ऐसे योग्य व्यक्ति हुए हैं कि उनके मुकाबले एक हजार साल बाद भी ऐसा व्यक्तित्व पैदा नहीं होगा। जो 32 डिग्रियाँ हासिल कर सके। श्री तोमर ने कहा की एक दलित घर में पैदा होकर और कठिनता से उस दौर में 32 डिग्रियाँ हासिल करना कोई मामूली बात नहीं थी आज के नेता तो अपनी फर्जी डिग्रियाँ दिखाकर जनता को बेवकूपफ बना रहे हैं।

इस अवसर पर परिसंघ के संगठन सचिव बाबूलाल, सुमित, वैभव, गणेश येरेकर, सी.एल.मौर्य, भारतीय समता समाज के महासचिव के.के.एस. राघव, भवानी महाराज जी, मनोहर लाल के अलावा हजारों कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। बाबा साहेब की इस जयंती को मनाने के लिये देश के विभिन्न संगठनों और सरकारी यूनियनों ने भी संसद मार्ग पर अपने पंडाल लगाकर बाबा साहेब को अपनी पुष्पाजंलि अर्पित की और बड़े पैमाने पर भण्डारे का भी जगह-जगह आयोजन किया गया।

डी.ओ.एम. परिसंघ की उ.प्र. इकाई ने कानपुर में डॉ. अम्बेडकर जयंती मनायी

सुशील कुमार कमल

दिनांक 14/4/2019 को देश के प्रथम कानून मंत्री, भारत रत्न परम आदरणीय बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती के अवसर पर अनुसूचित जाति/जन जाति, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक का अखिल भारतीय परिसंघ (डीओएम परिसंघ) के तत्वावधान में सद्भावना वाहन रैली निकाली गयी, जिसमें आगामी 2019 के आम चुनाव को लेकर मतदाता जागरूकता अभियान के तहत मतदाताओं से अपना मत जरूर डालने पर जोर दिया गया। सैकड़ों की संख्या में दो पहिया वाहन

के साथ उपस्थित लोगों को प्रदेश अध्यक्ष सुशील कुमार कमल ने लोगों से कहा कि बाबा साहेब के द्वारा निर्मित संविधान में मताधिकार दिए जाने और इस लोकतंत्र के महापर्व पर सभी लोग अपने मत के साथ अपने परिवार एवं आस-पड़ोस के लोगों को मताधिकार के प्रति जाग्रत कर उन्हें अपना वोट जरूर डालने को कहें। क्योंकि यही हमारी ताक़त है, जिसका इस्तेमाल करके एक स्वस्थ एवं अच्छी सरकार बनाएं। प्रदेश उपाध्यक्ष पंचम लाल जी ने वहां पर उपस्थित सभी लोगों को परिसंघ के चेयरमैन डॉ. उदित राज जी के संघर्षों को विस्तार में बताया कि कैसे उन्होंने एक आई.आर. एस. रहते हुए दलितों के हक की लड़ाई लड़ी और आज भी सांसद रहते हुए संसद से लेकर सड़क तक संघर्ष करते हैं। उन्होंने संसद में सबसे अधिक दलित मुद्दों पर आवाज उठायी। चाहे वह रोहित वेमुला का मुद्दा हो या पदोन्नति में आरक्षण का मुद्दा हो जोनल कोर्डिनेटर आर.के. कमल जी ने परिचय और परिसंघ की कार्यप्रणाली को वहां पर उपस्थित लोगों को समझाया। उन्होंने बताया कि परिसंघ 1997 से लेकर लगातार दलितों व पिछड़ों की लड़ाई लड़ रहा है। परिसंघ के द्वारा ही संविधान में 81वां, 82वां एवं 85वां संवैधानिक संशोधन तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में हुआ ताकि आरक्षण की रक्षा हो। सभी लोक पाल में आरक्षण को लेकर धरना-प्रदर्शन किया गया एवं हर वर्ष रामलीला मैदान, दिल्ली में रैली करके दलितों व पिछड़ों के मुद्दे पर चर्चा करते रहते हैं। कानुपुर मंडल के कोषाध्यक्ष श्री बी.एन. कमल ने सभी से अपील किया कि हर वर्ष इसी तरह वाहन जुलूस के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन एवं संगठित होने का प्रयास होता रहे। इस पूरे कार्यक्रम के आयोजन डी.ओ.एम. परिसंघ कानपुर के जिलाध्यक्ष वतन कुमार पासवान एवं उनकी टीम के सदस्य धर्मेंद्र कठेरिया, करन बाल्मीकि, अनीता कठेरिया ने रात-दिन मेहनत करके किया, जिसके परिणामस्वरूप भारी संख्या में लोग अपने दो पहिया वाहन से जुलूस में शामिल हुए। मतदाताओं को जागरूक करने के लिए कुछ नारे लगाए गए, जिसमें विशेषरूप से ''जन-जन की यही पुकार - वोट डालो अबकी बार।'' ''जो बांटे दारू साड़ी नोट - उनको कभी न देना वोट।'' ''सारे काम छोड़ दो - सबसे पहले वोट दो।'' मंच पर उपस्थित सभी लोगों को मतदान को लेकर प्रदेश अध्यक्ष सुशील कमल ने शपथ दिलायी।

सद्भावना वाहन जुलूस कानपुर में मसवानपुर चौराहे से शुरू होकर सराय चौराहा अम्बेडकरपुरम आवास विकास महाबलीपुरम से होते हुए कल्याणपुर के रास्ते संत रविदास आश्रम आई.आई.टी. गेट पर संपन्न हुई। जहां सभी ने संत रविदास जी को नमन किया और जुलूस के लिए जगह-जगह पर लोगों ने जलपान की व्यवस्था की। जुलूस में विशेषरूप से मंजीत कुमार, सतीश कमल, नीरज कमल, राजेन्द्र कमल, अरुण कमल आदि के नेतृत्व में भी लोगों ने शिरकत की।

परिसंघ जिला इकाई बनासकांठा (गुजरात) में धूमधम से मनाई गयी डॉ. अम्बेडकर की 128वीं जयंती

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की बनासकांठा जिला इकाई (गुजरात) के तत्वावधान में पालनपुर तहसील के मकाना गांव में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की 128वीं जयंती मनायी गयी। इस दिन पूरा विश्व नीले रंग से रंग जाता है। जगह-जगह पर सभाएं आयोजित करके और दिवाली जैसे त्योहार की तरह हर्षोल्लास से महामानव गौतम बुद्ध की जयंती 14 अप्रैल को मनायी जाती है। इस अवसर पर गुजरात प्रदेश के बनासकांठा जिला इकाई द्वारा पालनपुर तहसील के मकाना गांव में परिसंघ के जिलाध्यक्ष उत्पल कुलकर्णी की उपस्थिति में डॉ. अम्बेडकर जयंती मनायी गयी। अपने उद्बोदधन में उत्पल कुलकर्णी ने बाबा साहेब के जीवन दर्शन की बात रखी और आगे कहा कि हम लोग संगठन के बिना अधूरे हैं। कई लोग कहते हैं कि संविधान को कोई छू भी नहीं सकता लेकिन 1950 के बाद आज तक लगभग 110 से भी ज्यादा संविधान संशोधन बिल पारित हुए। क्या इससे साबित नहीं होता कि संविधान बदला जा रहा है।

इसलिए मेरा दृढ़ विश्वास है कि इसे रोकने के लिए परिसंघ के बिना यह काम अधूरा है। परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज जी हमारे अधिकार के लिए चिंतित हैं। हमें उनके हाथों को मजबूत करना चाहिए। आज तक परिसंघ ने 21 राष्ट्रीय स्तर की रैलियां दिल्ली में निकाली हैं और आरक्षण बचाने की मुहिम को और ज्यादा सशक्त किया है। यह सब तब मुमकिन हुआ है जब हमारा शीर्ष नेतृत्व डॉ. उदित राज जी के पास है, वे सच्चे अम्बेडकरवादी हैं। डॉ. अम्बेडकर जी के रास्ते को और मजबूत करने के लिए परिसंघ को मजबूत करना पड़ेगा।

इस अवसर पर परिसंघ के जिला कोषाध्यक्ष जितेन्द्र परमार, जयेश बागड़ौदा, जयेश चौहाण आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बच्चों की भागीदारी सराहनीय रही। इस अवसर पर बच्चों को पेन और नोटबुक भेंट की गयी। इसके अलावा परिसंघ के जिलाध्यक्ष उत्पल कुलकर्णी और उनकी टीम ने पालनपुर में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर टीम के साथ पुष्प अर्पित किया। बाद में अमीरगढ़ तहसील में आयोजित अम्बेडकर प्रतिमा अनावरण में भी हिस्सा लिया।

कुलकर्णी और उनकी टीम समय-समय पर परिसंघ के विस्तार के लिए कोशिश ही नहीं करते बल्कि पूरा जोर लगाते रहते हैं।

जय भीम! जय भारत!!

झारखंड परिसंघ ने मनाया बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर जयंती

मधुसूदन कुमार

आज दिनांक 14 अप्रैल, 2019 को अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ झारखंड प्रांत इकाई के तत्वावधान में बाबा साहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 128वीं जयंती धूमधाम के साथ मनायी गयी। इस अवसर पर अनेक गणमान्य जनों एवं अन्य सदस्यगणों का उत्साह अति सराहनीय महसूस की गयी।

इस अवसर पर एक सामूहिक भोज का आयोजन भी किया गया था। मंच पर अति गणमान्य जनों में श्री सुबोधकांत सहाय संसदीय प्रत्याशी ने शिरकत किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी साथियों ने भरपूर सहयोग किया तथा महिला विंग की संयोजिका श्रीमती ऊषा देवी ने अपने सहयोगियों के साथ कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर सर्वश्री मधुसूदन कुमार, बिल्फ्रेड केरकेट्टा, रोनोलिस मिंज, ए.बी. राम., महेश कुमार, प्रकाश राम, कपिल राम, पिंकू रवि, जगदीश राम, संतोष कुमार राम, मनीन्द्र कुमार, सुचित राम, दामोदर राम, अरविंद कुमार, डॉ. सुपर्णा बरूआ दत्ता, माला देवी, रेणु कुमारी, राखी देवी, गीता देवी, काजल देवी, कलावती देवी, रोशनी देवी आदि की सहभागिता प्रशंसनीय रही।

धनबाद परिसंघ ने भी मनायी बाबा साहेब की जयंती

छोटन प्रसाद राम

आज दिनांक 14.4.2019 को तोप पीची प्रखंड के अंतर्गत जिला धनबाद हरिहापुर गांव में अजा/जजा मोर्चा तथा परिसंघ के तत्वावधान में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा स्थापित की गयी,

जिसमें मुख्य अतिथियों के द्वारा बाबा साहेब की प्रतिमा का अनावरण किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. दुर्गा मरांडी आदिवासी एकता मंच, विशिष्ट अतिथि पी.एन. राम (एसबीआई धनबाद) एवं राजीव रंजन पासवान व अलोक मुखिया तथा जनप्रतिनिधि भी शामिल थे। सभा की अध्यक्षता श्री बजरंगी दास ने किया तथा मंच संचालन छोटन प्रसाद राम एवं धन्यवाद ज्ञापन विद्यानंद दास ने किया।

अमेरिकी अश्वेतों के पास खुद के बैंक, कंपनियां, रेडियो और अखबार हैं

अपने लिए अलग बैंक बनाएं दलित

चंद्रभान प्रसाद

आज अमेरिका में अश्वेतों के स्वामित्व वाले 21 बैंक हैं, जिनकी संयुक्त पूंजी 4.7 अरब डॉलर है, यानी लगभग 330 अरब रूपये। अश्वेत स्वामित्व की तमाम क्रेडिट यूनियंस हैं, अश्वेत स्वामित्व वाली इंश्योरेंस कंपनियां हैं और अनेक वित्तीय संस्थाएं भी। दलित बौद्धिक परंपरा में अमेरिका और अमेरिकी अश्वेतों का जिक्र बार-बार आता है। वर्ष 1918 में अपने पहले महान ग्रंथ 'स्मॉल होल्डिंग्स' में डॉ. आंबेडकर अमेरिकी कृषि-व्यवस्था का उदाहरण देते हैं और भारतीय कृषि व्यवस्था को भी वही औद्योगिक स्वरूप दिए जाने की वकालत करते हैं। उन्होंने अपनी राजनीतिक पार्टी 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया' का नामकरण भी दास प्रथा समाप्त करने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की रिपब्लिकन पार्टी के नाम पर किया। डॉ. आंबेडकर के बाद का दलित आंदोलन भी अमेरिकी अश्वेत आंदोलन से प्रभावित रहा है। मई 1971 में शुरू हुआ दलित पैंथर आंदोलन वर्ष 1966 में अमेरिका में उभरे ब्लैक पैंथर्स आंदोलन से प्रभावित था।

भारत में दलित कैपिटलिज्म आंदोलन 1960 के दशक के अमेरिकी ब्लैक कैपिटलिज्म से प्रेरित है। दलित बैंक का मुद्दा भी अमेरिकी अश्वेत स्वामित्व के बैंकों से प्रेरित है। अमेरिका में दास प्रथा के अंत के मात्र 25 वर्ष बाद ही 1886 में एक पूर्व दास ने 'ग्रैंड फाउंटेन' नाम से पहला अश्वेत बैंक स्थापित किया। 1900 में एक पूर्व अश्वेत दास बुकर टी वॉशिंगटन ने प्रथम 'नैशनल नीग्रो बिजनेस लीग' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था अश्वेतों में आर्थिक शक्ति खड़ी करना। इसी समय एक अश्वेत महिला मैडम सी जी वॉकर ने पहला अश्वेत ब्रांड मार्केट में लॉन्च कर दिया। नैशनल नीग्रो बिजनेस लीग से प्रभावित होकर तमाम अश्वेत नौजवानों ने बिजनेस को अपना करियर बनाना शुरू कर दिया। वर्ष 1949 में पहला अश्वेत व्यक्ति वॉल स्ट्रीट पर एक सेल्समेन के रूप में रजिस्टर्ड हुआ। 1952 में पहली अश्वेत सिक्योरिटीज फर्म को नैशनल असोसिएशन ऑफ सिक्योरिटीज डीलर्स द्वारा शेयर ट्रेडिंग का लाइसेंस मिला।

वर्ष 1960 में पहली बार एक अश्वेत कंपनी वॉल स्ट्रीट पर रजिस्टर्ड हुई। आज तमाम अश्वेत वॉल स्ट्रीट में इन्वेस्टमेंट बैंकर्स, फाइनेंशियल अनालिस्ट, ट्रेडर्स, फंड मैनेजर्स और वेंचर कैपिटलिस्ट के रूप में कार्यरत हैं। वर्ष 1991 में पहली अश्वेत कंपनी 'ब्लैक एंटरटेनमेंट टेलीविजन' न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज पर ट्रेडिंग के लिए लिस्टेड हो गई। फोर्ब्स मैगजीन ने वर्ष 2001 में ब्लैक एंटरटेनमेंट टेलीविजन के संस्थापक रॉबर्ट एल जॉनसन के प्रथम अश्वेत अरबपति होने की घोषणा की, हालांकि तलाक के कारण उन्होंने अरबपति का ताज खो दिया। पर तीन नए अश्वेत अरबपति- मैडम ओप्रा विनफ्रे, माइकल जऑर्डन तथा रॉबर्ट स्मिथ अश्वेतों की शान बढ़ा रहे हैं। दरअसल दो तरह की संस्थाओं ने अमेरिकन अश्वेतों की तस्वीर बदल दी। नीग्रो बिजनेस लीग ने अश्वेतों में बिजनेस को लोकप्रिय बनाया, जबकि अश्वेत स्वामित्व के बैंकों ने अश्वेतों के बीच धन संचित करने की एक नई संस्कृति पैदा की। आसान शर्तो और कम इंट्रेस्ट रेट पर लोन उपलब्ध कराकर अश्वेत बैंकों ने अश्वेत युवाओं में कारोबार शुरू करने का उत्साह पैदा किया।

अश्वेत बैंकों की स्थापना के कारण समूचे अमेरिकी अश्वेत समुदाय में एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ। अभी भी बहुत सारे अश्वेत गरीब हैं और नस्ली भेदभाव का शिकार होते है पर कुल मिलाकर, अमेरिकी अश्वेत आज एक बड़ी आर्थिक शक्ति बन चुके हैं। अमेरिका के जाने-माने अश्वेत लेखक और रेडियो होस्ट लोरी एल्डर के मुताबिक यदि अमेरिकी अश्वेत एक देश होते तो जीडीपी के मामले में दुनिया के पंद्रहवें सबसे अमीर मुल्क होते। उन्होंने 2014 में अश्वेतों की वार्षिक आय 836 अरब डॉलर बताई। एक और संस्था सोलिंग सेंटर के अनुसार अश्वेतों की वार्षिक आय 1000 अरब डॉलर है। ध्यान रहे, अश्वेत अमेरिका की आबादी मात्र 12.5 प्रतिशत है, यानी चार करोड़ से भी कम। पैसा आने के साथ ही अश्वेत समाज के पास अपने अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो स्टेशन, न्यूज चौनल आदि सब आ गए हैं। गीत, संगीत, फिल्म, कला, खेल, सेना, कानून, विज्ञान, राजनीति- हर क्षेत्र में अश्वेत समाज ने अपनी जगह बनाई है। बराक ओबामा का राष्ट्रपति बनना अश्वेत समाज की प्रगति का एक प्रतीक है। अब भारत में दलितों को देख लें। बीस करोड़ की आबादी वाले दलित समाज से विधायक, सांसद, कैबिनेट मंत्री यहां तक कि मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति तक हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, कॉरपोरेट प्रफेशनल्स और उद्यमी तो हैं ही। पर इनके पैसों का क्या होता है? आखिर देश में एक भी दलित बैंक क्यों नहीं है? दलित इंश्योरेंस कंपनी क्यों नहीं है? अमेरिकी अश्वेतों ने अपनी कमाई को अनुशासन में बांधा और तमाम तरह के उद्मम स्थापित किए। चूंकि इनका धन संगृहीत और व्यवस्थित रहा लिहाजा इनके अपने अखबार, रेडियो स्टेशन, टीवी चौनल सब कुछ हो गए। लेकिन भारतीय दलितों की कमाई अनुशासित नहीं हो पाई, इसलिए वह सामाजिक ताकत नहीं बन पाई।

यह सोचना गलत होगा कि दलितों के पास पैसा नहीं है इसलिए दलित बैंक नहीं बन पा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के मात्र एक जिले शाहजहांपुर का ही उदाहरण लीजिए। जनपद में मात्र बेसिक शिक्षा में 1155 रेगुलर दलित शिक्षक हैं। एक शिक्षक का पहला वेतन 39,000 रुपये से शुरू होता है। यदि इन दलित शिक्षकों का औसत मासिक वेतन 50,000 रुपये मान लें, तो इनकी संयुक्त मासिक कमाई पांच करोड़ 77 लाख होगी। यानी 69.24 करोड़ वार्षिक या दस साल में 692.4 करोड़। अर्थ यह कि मात्र एक जनपद शाहजहांपुर में दलित शिक्षक ही एक बैंक खड़ा कर सकते है। दलितों की दौलत बाढ़ के उस पानी की तरह है जो समुद्र में जाकर मिल जाता है। जरूरत इस बात की है कि बाढ़ के इस पानी को बांध बनाकर रोका जाए। दलित समाज में एक नहीं सौ दलित बैंक बनाए जाएं। दलित बैंक समय की जरूरत है।

http://epaper.navbharattimes.com/details/23982-59087-1.html

आधुनिक भारत में महिलाओं की स्थितिः एक अध्ययन

डॉ. रवि महेन्द्रा

आधुनिक भारत के निर्माता बाबा साहेब आंबेडकर ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र देश का संविधान लिखा। इस संविधान में उन्होंने एक ऐसे भारत के निर्माण का खाका सींचा, जिसमे समाज के सभी लोगो की भागीदारी हो और देश मजबूती से आगे बढे। डॉ. अम्बेडकर चाहते थे कि आजादी के बाद देश में राजनितिक लोकतंत्र ही नहीं बल्कि सामाजिक एवम आर्थिक लोकतंत्र की स्थापित हो। इस संविधान के माध्यम से बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर चाहते थे कि इस देश के शासक भारत में एक सच्चे लोकतंत्र की स्थापना करेंगे। लेकिन पिछले 73 सालों में इस देश के शासकों ने राजनितिक लोकतंत्र की स्थापना की तरफ कदम तो बढ़ा दिए लेकिन आज भी सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना कोसो दूर है। आज भी एक बड़ी आबादी जिसके हिस्सेदारी हमारे देश कि जनसँख्या में 5 प्रतिशत है। जब हम महिलाओं कि राजनेतिक भागीदारी को देखते है तो 1992 से लेकर 2014 तक महिलाओं कि भागीदारि लोक सभा में 8 प्रतिशत से लेकर 12 प्रतिशत तक रही है। जिससे यह साफ नजर आता है कि 5 प्रतिशत महिला आबादी को सही अर्थों में राजनितिक भागीदारी प्राप्त नहीं हुई। इसी तरह जब हम भारतीय समाज में महिलाओं के स्तिथि को दखते है तो आज भी उनके साथ सामाजिक भेदभाव व लिंग भेदभाव जारी है। महिला अपने फैसले समाज में नहीं ले सकती। आज भी भारतीय समाज में पुरुष प्रधानता को साफतौर पर देखा जा सकता है । आज भी घूँघट प्रथा, बाल विवाह, महिलाओं के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार, दहेज प्रथा, अशिक्षा व घरेलु हिंसा जारी है जोकि भारतीय समाज की कटु सच्चाई को दर्शाता है।

इसी तरीके से भारतीय समाज में आर्थिक क्षेत्र में गहरी असमानता साफ दिखाई देती है और खासतौर पर आर्थिक क्षेत्र में तो महिलाओं का और भी भयंकर शोषण हो रहा है। आज भी भारत में पुरुष प्रधान व्यवस्था के कारण संपत्ति ज्यादातर पुरुषो के पास है। सरकारी क्षेत्रों में फिर भी महिलाये नजर आती है लेकिन निजी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। जिसके कारण महिलाओं के पास अपने विकास के लिए उचित मात्र में आर्थिक संसाधन उपलब्ध नहीं है। जबकि वर्तमान युग पूंजीवादी युग है, जिसमे महिलाये पिछड़ रही है। इसी तरीके से जब हम खेल के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को देखते है तो उनकी आबादी को देखते हुए संख्या बहुत कम है । लेकिन अगर महिलाओं को खेलों में उचित भागीदारी दी जाए तो वह भी देश को गौरवान्वित कर सकती है। लेकिन ज्यादातर खेल संगठनों में अध्यक्ष पुरुष है जोकि पुरुष प्रधानता की सोच से ग्रस्त है। लेकिन इसके बावजूद भी पी.टी उषा, कर्णममलेश्वरी, सयाना नेहवाल, पी.वी सिन्धु, एम.सी मेरिकोम दीपा व दीपा कर्मकार जैसी महिलाओं ने देश को समय समय पर गौरवान्वित किया है।

इस प्रकार ऊपर लिखित विवरण से यह साफ नजर आता है कि जिस भारतीय समाज की कल्पना डॉ. अम्बेडकर ने की थी उससे हम आज भी कोसो दूर है। क्योकि डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि किसी भी देश कि तरक्की को अगर आप देखना चाहते है तो यह देखिये कि उस देश में महिलाओं कि भागीदारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व खेल के क्षेत्र में कितनी है? अगर महिलाओं कि भागीदारी उनकी संख्या के अनुपात में नहीं है तो हम वास्तविक एवं सच्चे लोकतंत्र कि स्थापना नहीं कर सकते।

पत्नी गिड़गिडाती रही, दलित को जिंदा जलाकर मार डाला

भोपाल/बैरसिया, बैरसिया के परसोरिया गांव में गुरूवार को दिल दहलाने वाली घटना में चार लोगों ने एक दलित किसान किशोरी लाल (60) को पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया। घटना के समय किसान की पत्नी पंखिया बाई पति की जान बख्शने की भीख मांगती रही, लेकिन आरोपियों का दिल नहीं पसीजा।

एसपी हेमंत सिंह चौहान के मुताबिक घाटखेड़ी निवासी किशोरी लाल की सड़क से लगी 3.5 एकड़ कीमती जमीन पर आरोपी कब्जा कर खेती कर रहे थे। इसका विरोध करने वह सुबह 9 बजे खेत पर पहुंचा तो आरोपी तीरन यादव, उसका बेटा प्रकाश, भतीजा संजू और बलवीर ट्रेक्टर से बीज बोते मिले।

विरोध करने पर आरोपी उससे मारपीट करने लगे। विवाद इतना बढ़ा कि उन्होंने दलित किसान पर पेट्रोल डालकर आग के हवाले कर दिया। इससे मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद अस्पताल में परिजनों के साथ गांव वालों की भीड़ जमा हो गई। भोपाल से वरिष्ठ पुलिस अफसर जब अस्पताल पहुंचे तो लोग भड़क गए। हिस्से को यादव परिवार ने खुद की बताते हुए कब्जा कर रखा था। दो साल पहले किशोरी ने खेत की नाप कराई तो कुछ हिस्सा आरोपियों के कब्जे में हाने की जानकारी मिली। तब से विवाद की स्थिति बनी हुई थी। आरोपी तीरन भाजपा से जुड़ा है। वह धौंस दिखाता था। मृतक के बेटे कैलाश जाटव ने बताया कि कब्जे की शिकायत करने उसके पिता कई बार बैरसिया थाने गए लेकिल टीआई उन्हें गाली देकर दुत्कार देते थे।

https://www.patrika.com/bhopal-news/dalit-farmer-was-burnt-and-killed-2991075/

SC/ST/OBC Confederation celebrated Birth Anniversary of Dr. Ambedkar at all the District & Tehsil Headquarters on 14th April & pressed for their demands also:

Jammu 27 March 2019: State unit of All India Confederation of SC/ST/OBC Organisations has decided to organise celebration of birthday of father of Indian Constitution Dr. B R Ambedkar in each district & Tehsil Headquarters & press their Constitutional demands for immediate implementation wherein all units will send Memorandums to His Excellency the President of India and Hon'ble Governor J&K.

In a press note State President of The Confederation, Mr. R K Kalsotra informed the media that unnecessarily State government is delaying the implementation of Presidential Order in which His Excellency has restored the Reservation in Promotion for which they were continously struggling, time to time orahnisied Assembly ghearo, organised Secretariat ghearo, even a march to Chief Minister's house and protests on arrival of the Prime Minister at Jammu on his last visit and on 17th March again District Units of Confederation protested and submitted memorandum directly to Hon'ble Governor for implementing Presidential Order for Reservation in Promotions.

He further said when order has reached the Governor House why it is being delayed. He asked the Hon'ble Governor to immediately implement the order and issue promotions of the effected employees and in this connection Confederation has decided to celebrate the birthday of Baba Sahib Dr B R Ambedkar simultaneously in all the district and Tehsil headquarters on 14th April 2019 alongwith celebration, will also submit a Memorandum to His Excellency The President of India & Hon'ble Governor for implementing the Promotion immediately alongwith clearance of backlog of SC, ST & OBC Youth and to further implement 27% OBC Reservation instead of 2%. He also cautioned those political parties which are objecting over the rights of downtrodden to refrain away from such dirty politics whereas on the other hand Kalsotra also criticised the party which without implementing the Presidential order are claiming their Victory over it.

Others who spoke at the occasion were Mohd Shari Bajjad, G D Chalotra, Sat Paul Bhagat, Sarfeaz Chouhan, Dev Raj & Madan Lal

Ambedkar Jayanti at Tamil Nadu

The All India confederation of SC/ST organisation is a non Governmental organisations. Registered under societies registration act 1860. It's registration number is 33084/98.

All India confederation of SC/ST organisation is headed by the National Chairman, DR.Uditraj Ex. IRS.who is at present MEMBER of Parliament (Lok Sabha) North West Delhi.

He is an eminent and dynamic leader and living legend for SC/STs community to save their constitutional provisions enacted by the Father of Indian Constitution Dr.Babasaheb Ambedkar.

Our National Chairman Dr.Udit Raj ji's commitment to uplift our community is really commendable. He has never betrayed the society.

His achievements as MEMBER of Parliament to our Community is really a great achievement.

He is the only member of parliament who has given 100 percent reservation to women for development programs in his constituency. Hehas written more than 27000 letters to various authorities for social justice. He has placed more than 350 private bills and given voice to oppressed and suppressed community in the parliament.

His committed work brought him under limelight recently by India Today.

The National level survey conducted by India Today proved beyond doubt that he is the man for social cause. Further we are proud and happy to inform that he is under top 10 VVIP MPs list and stood Number 02 MP in India.

We are very proud to work for him under the ambit of All India confederation of SC/ST Organization.

In TAMILNADU The All India confederation of SC /ST Organization celebrated Dr Ambedkar 128 Jayanthi throughout the State in the presence of our affiliated unit heads and District President.

The Cordite Factory SC/ST Association celebrated at CFA Ooty. HVF.Enginge Factories, CVRDE and OCF Management Celebration was also Excellent. The OCF, GM, shri Satyanarayan gave an excellent speech. Shri Nathaji Kumar Dstt. President Thiruvallur Organized a programme At Vitchoor village .Vitchoor Narayanan. Sagadevan.Kumaran and CPCL Saravanakumar.Thanigachalam and Vendan ji participated.

FCI SC/ST Association celebrated under the leadership of Shri A Muthaiah and Tniyagaran at Adayar. Dr.Ambedkar Manimandapam foods were distributed and many IAS officer visited the stall.

Shri Dhandapani MTC SC/ST Association President and team also took part and celebrated the programme.

ICMR/NIRT SC/ST Association. Censes SC/ST Association and HAPP SC/ST Association Trichy celebrated the function under the leadership of Shri Velmurugan Srinivasan and Shri Shri Elangovan respectively.

Our Dt PRESIDENT shri City Babu.Velliore.Vijayan Salem and team of SAIL SC/ST Association, Salem Shri Ravichandran organized a grand programme.

Your State PRESIDENT organized the programme At Puzhal area in Chennai and participated with family members.

On 15.04.2019.

MADRAS FERTILIZERS LTD MANALI CHENNAI.MFL SC/ST Associations organized the birthday function of Dr.Babasaheb in which officials from CPCL.and Balmer Lawrie service Participated.

All India confederation of SC ST Organization appeals to every one to join hand with Dr.Udit Raj Ex. IRS. National Chairman AICON to strengthen his arms to get our legitimate rights.

With regards S KARUPPAIAH State PRESIDENT

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the Voice of Buddha will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of 'Justice Publications' at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:

Five years	**:**	**Rs. 600/-**
One year	**:**	**Rs. 150/-**

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 22 ● Issue 8 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● Total Pages 8 ● 1 to 15 April, 2019

Bike Rally for Justice

Jammu 14.04.2019 (J&K) : Bike Rally for Justice

"Homage to Dr. Ambedkar on 128th Birth anniversary" was organised by All India Confederation of SC/ST/OBC Organisations. The Bike Rally was flagged off by State President,All India Confederation of SC/ST/OBC Organisations Sh R K Kalsotra, Padamshree Awardee Hon'ble S P Verma & BL Bhardwaj, Gen Secy, Confederation at 10.30 AM on 14th April 2019 from Ambedkar Park, Resham Ghar to Ambedkar chowk Rail Head Jammu.

Majority of participants were youth of NSOSYF from City of Jammu who with full enthusiasm with panchsheel flags and raised slogans like jai bheem jai bharat, jab tak suraj chand rahega baba tera naam rahega etc. A number of drummers were also part of the celebration. Portrait of Baba Sahib was graced with flower showering.

Paying tribute to Baba Sahib, State President Shri. R K Kalsotra apprised the gathering that in 1954 on Oct 27 while addressing the masses at Jalandhar Baba Sahib Ambedkar said when he came from England after getting his degree of Doctor of Philosophy, there was nobody in India with such qualification. He declined all tempting offers of Government jobs because he had a great feeling for the service of his community. He further said while in Congress Govt. he retained true to his people. His critics pointed out that he had joined the Congress. He explained that he is like a rock which does not melt but turns the course of rivers. He apprised that there were 30 S/C MPs. They never asked any question and never submitted a bill for consideration in the Parliament, giving impression to the outside world that the people have no problems and they do not require any special consideration.He also said, he has built the house for us. Now it is up to us to maintain it in properly. He has planted the tree, if you water it you will enjoy the fruits and it's shade.If not, you will have to sit in the sun and our community will be ruined. Kalsotra appeal to the community to come forth and strengthen the Confederation to complete the unfinished work of Baba Sahib for the welfare of the people.

SP Verma gave his greeting to the nation on the auspicious occasion & said that Ambedkar's contribution in the Freedom of the nation was at par with Father of nation Mahatma Gandhi. Ambedkar became the Messiah of the downtrodden. He said every individual, regardless of class, caste, gender can progress by drawing learning from his life.

While addressing BL Bhardwaj appraised the participants that Baba Sahib was a learned man with following qualification like B.A., M.A., M.Sc., D.Sc., Ph.D., L.L.D., D.Litt., Barrister-at-Law., B.A.(Bombay University), Bachelor of Arts, MA.(Columbia university), Master Of Arts, M.Sc. (London School of Economics), Master Of Science, Ph.D. (Columbia University), Doctor of philosophy, D.Sc. (London School of Economics), Doctor of Science L.L.D.(Columbia University), Doctor of Laws, D.Litt.(Osmania University) Doctor of Literature, Barrister-at-La (Gray's Inn, London) law, qualification for a lawyer in, royal court of England., Elementary Education, 1902 Satara, Maharashtra, Matriculation, 1907, Elphinstone High School, Bombay Persian etc., Inter 1909, Elphinstone College, Bombay Persian and English B.A, 1912 Jan, Elphinstone College, Bombay, University of Bombay, Economics & Political Science, M.A 2-6-1915 Faculty of Political Science, Columbia University, New York, Main-Economics, Ancillaries-Sociology, History Philosophy, Anthropology, Politics, Ph.D 1917 Faculty of Political Science, Columbia University, New York,The National Divident of India - A Historical and Analytical Study' M.Sc 1921 June London, School of conomics, London 'Provincial Decentralization of Imperial Finance in British India' Barrister-at-Law 30-9-1920 Gray's Inn, London Law D.Sc 1923 Nov London School of Economics, London 'The Problem of the Rupee - Its origin and it's, solution' was accepted for the degree of D.Sc. (Economics). L.L.D (Honoris Causa) 5-6-1952 Columbia University, New York For HI Hchievements, Ladership and authoring the constitution of India, D.Litt (Honoris Causa) 12-1-1953 Osmania University, Hyderabad For HIS achievements, Leadership and writing the constitution of India!

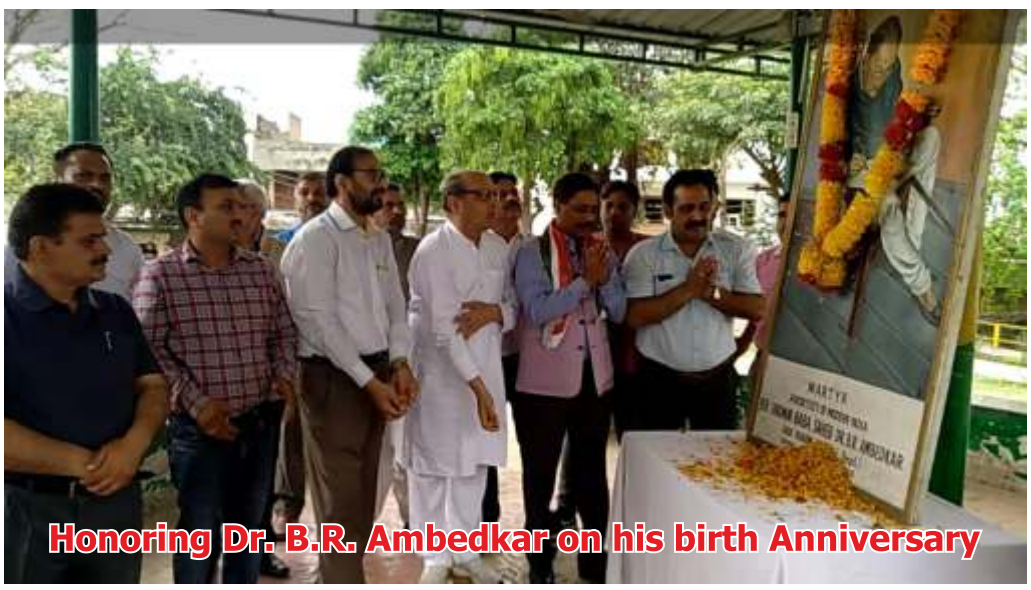

Honoring Dr. B.R. Ambedkar on his birth Anniversary

Bike Rally was led by State Coordinators NSOSYF Maheep Bhardwaj, Ashwani Bhagat & Tarun Paroch marched through Maheshpura Chowk, Breg.Rajinder Singh Chowk, Indira Chowk, Lower Gumat Chowk, Jewal, Dogra Chowk, Bikram Chowk, Last More Gandhi Nagar, via Valmiki Temple culminated under the Statute of Baba Sahib Dr Ambedkar at Ambedkar Chowk were all the members of the rally garlanded the statute of Baba Sahib and joined in a Megha Mela which was organised their

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: parisangh1997@gmail.com Computer typesetting by Ganesh Yerekar